24

''तुज़्हारा उजियाला चमके''

मत्ती 5:14-16, एक निकट दृष्टि

पिछले प्रवचन में हमने ''तुम अपनी कीमत नहीं जानते'' पहाड़ी उपदेश के दूसरे भाग मत्ती 5:13-16 का अध्ययन शुरू किया था। उसमें हमने ''तुम पृथ्वी का नमक हो'' में शामिल शब्दों पर बात की थी। इस प्रवचन में हम 14 से 16 आयतों पर चर्चा करेंगे:

> तुम जगत की ज्योति हो; जो नगर पहाड़ पर बसा हुआ है, वह छिप नहीं सकता। और दीया जलाकर पैमाने के नीचे नहीं परन्तु दीवट पर रखते हैं, तब उससे घर के सब लोगों को प्रकाश पहुंचता है। उसी प्रकार तुज़्हारा उजियाला मनुष्यों के साज़्हने चमके कि वे तुज़्हारे भले कामों को देखकर तुज़्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें।

एक प्रशंसा

''तुम जगत की ज्योति हो।'' यदि आप इस कथन पर गज़्भीरता से विचार करें, तो हैरान रह जाएंगे। इन वचनों से हमें पता चलता है कि, मसीही होने के नाते हम परमेश्वर की योजनाओं तथा उद्देश्यों में ही भागीदार नहीं होते, बल्कि कुछ हद तक हम परमेश्वर और यीशु के *गुणों* में भी साझी होते हैं। यूहन्ना ने कहा, ''परमेश्वर ज्योति है'' (1 यूहन्ना 1:5)। यीशु ने कहा, ''जगत की ज्योति मैं हूं'' (यूहन्ना 8:12)। इन आयतों के द्वारा, यीशु अपने अनुयायियों से कहता है, ''*तुम* जगत की ज्योति हो।''[1] यदि इससे परमेश्वर की सन्तान के रूप में आपका सीना चौड़ा नहीं होता तो और किसी बात से नहीं हो सकता है।

यीशु के यह कहने का ज़्या अर्थ था कि ''तुम जगत की ज्योति हो''? नमक और प्रकाश में अन्तर पर विचार करें। उस समय नमक का मुज़्य उद्देश्य *नकारात्मक* अर्थात सड़न रोकने के लिए होता था। प्रकाश का मुज़्य उद्देश्य *सकारात्मक* अर्थात अन्धकार को छितराना होता है।

पुन:, यीशु के रूपक से हमें संसार व मसीही लोगों के बारे में कुछ पता चलता है। यह हमें बताता है कि यह संसार *अन्धकार* में है। परन्तु संसार के लोग यह बात मानने को

तैयार नहीं हैं। कई बार जब लोग बाइबल को ठुकराते हैं, तो वे कहते हैं, ''हम *शिक्षित* युग में रहते हैं।'' आपने यह भी सुना होगा ''नया प्रमाण *मिला* है।'' परन्तु सच्चाई यह है कि यह संसार पाप के अन्धकार में डूबा हुआ है। परमेश्वर के पवित्र वचन के प्रकाश के बिना हर बुद्धिजीवी अन्धकार का ही ज्ञानी है।

संसार वास्तव में अन्धकार को पहल देता है। प्रकाश से ''अन्धकार की छिपी बातें'' (1 कुरिन्थियों 4:5) सामने आ जाती हैं। यीशु ने कहा कि उसके समय के लोगों ने ''अन्धकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना, ज़्योंकि उन के काम बुरे थे'' (यूहन्ना 3:19)। एक बार मेरी पत्नी और मैंने किराये पर घर लिया। एक परिवार के चले जाने के बाद, उस घर को देखने अगले दिन हम भी गए। उन्होंने घर की बड़ी बुरी हालत कर रखी थी, वहां से बदबू आ रही थी। जब हमने बज़ी जलाई, तो हर तरफ कीड़े ही कीड़े दिखाई दे रहे थे! कीड़ों को रोशनी पसन्द नहीं होती, और न ही पाप से भरे संसार को। फिर भी, संक्षेप में कहें तो प्रकाश संसार की *आवश्यकता* है।

बाइबल की इस आयत में न केवल यह ऐलान है कि संसार अन्धकार में है, बल्कि यह आयत यह भी कहती है कि मसीही लोग जगत की *ज्योति* हैं। *मसीही लोगों* के पास प्रकाश है। यदि आप यीशु को जानने और बाइबल का ज्ञान रखते हैं, तो आपको विवाह, माता-पिता बनने तथा समस्याओं को सुलझाने और जीवन के बारे में किसी पी.एच.डी. तक पढ़े व्यज़्ति से, जो मसीही नहीं है, अधिक ज्ञान है।[2]

यीशु के अनुयायियों के रूप में, हमारे लिए अपना प्रकाश *चमकाना* आवश्यक है। हम यह प्रकाश सही जीवन जीकर चमकाते हैं। हम इसे परमेश्वर के वचन के द्वारा चमकाते हैं।[3]

मुझे संसार का नैतिक तथा आत्मिक अन्धकार अच्छा नहीं लगता। मैं मानता हूं कि अन्धकार मुझे निराश करता है। कई बार अन्धकार इतना अधिक हो जाता है कि लगता है, मैं हिज़्मत हार बैठा हूं। कभी-कभी मुझे अपने आप को याद दिलाना पड़ता है कि बिना अन्धकार के रोशनी का कोई महत्व नहीं होता। रोशनी का काम अन्धकार को छितराना है। इसीलिए परमेश्वर ने मुझे इस समय यहां पर रखा है।[4]

फिलिप्पियों 2:15, 16 एक उपयुज़्त पद है। पौलुस ने अपने पाठकों को ''निर्दोष और भोले होकर *टेढ़े और हठीले लोगों के बीच* परमेश्वर की निष्कलंक सन्तान बने'' रहने की चुनौती दी।

इस पर विचार करें: जितना घना अन्धेरा होगा, उतना ही प्रकाश तेज़ होगा। मेरे बेडरूम पर यह बात लागू होती है, जिसमें एक छोटा हरा बल्ब हर समय जलता रहता है। दिन के समय, इसका प्रकाश दिखाई भी नहीं देता। परन्तु रात को, जब मेरी आंखें अन्धकार पर टिक जाती हैं, तो मैं उस मद्धम से हरे प्रकाश में कमरे की हर चीज़ को देख सकता हूं। जब चारों ओर अन्धकार हो तो एक हल्का सा प्रकाश भी बहुत महत्व रखता है।[5]

मुझे यह ज़ोर देना चाहिए कि हम ''ज्योति'' इसलिए नहीं हैं कि हम में कोई अपनी सामर्थ है। बल्कि ''ज्योति'' हम प्रकाश के स्रोत, परमेश्वर और यीशु से जुड़े होने के

कारण हैं। मसीही लोगों की तुलना चांद से की जा सकती है, जो सूर्य से प्रकाश लेता है। हमारी तुलना प्रकाश के बल्बों से भी की जा सकती है, जो बाहरी ऊर्जा के स्रोत के कारण चमकते हैं। तो भी, यीशु ने हमें यह कहकर कि ''तुम जगत की ज्योति हो'' बड़ा सज़्मान दिया है।

एक चुनौती

मसीह की बातें प्रशंसा ही नहीं, बल्कि एक चुनौती भी हैं: हमें अपना प्रकाश *चमकाना* है।

यीशु ने कहा, ''जो नगर पहाड़ पर बसा हुआ है, वह छिप नहीं सकता'' (आयत 14ख)। उस ज़माने में, नगर पहाड़ियों या पहाड़ों पर बसाने के कम से कम दो कारण होते थे। पहला तो व्यावहारिक कारण था: इससे खेती के लिए उपयोगी भूमि व्यर्थ नहीं होती थी। दूसरा सुरक्षा की दृष्टि से था: पहाड़ी पर से, लोग शत्रु को अपनी ओर आते दूर से ही देख सकते थे।[6] वहां से गुजरता हुआ यात्री किसी नगर में पहुंचने पर कह सकता था कि वह नगर पहाड़ी पर बसा है। यीशु ने इसी ओर ध्यान दिलाया कि जिस प्रकार वे नगर छिप नहीं सकते थे, वैसे ही हमें भी अपना प्रकाश (अर्थात अपना प्रभाव) छिपाना नहीं चाहिए। यह प्रासंगिकता अगले शज़्दों में स्पष्ट हो जाती है।

यीशु ने आगे कहा, ''लोग दीया जलाकर पैमाने के नीचे नहीं'' रखते (आयत 15क)। NASB में ''टोकरी के नीचे'' है। पैमाने से बचपन में मैं बड़ा उलझन में पड़ जाता था, ज़्योंकि पैमाना चारों ओर से बंद होता था। शायद टोकरी के नीचे मोमबज़ी या दीया रखा जाता तो उसमें से रोशनी की किरणें फैल सकती थीं। NASB के 1995 के संस्करण में ''a peck-measure'' है। यह मिट्टी का एक बड़ा बर्तन होता था, जिसमें लगभग आठ सेर अनाज आता था।[7] ऐसे ठोस बर्तनों के नीचे दीया रखने से उसकी बज़ी बुझ सकती थी।[8]

पैमाने के नीचे दीया रखने के उदाहरण का मूल अर्थ इस उपदेश में नमक के अपना स्वाद ज़ोने के उदाहरण की तरह ही है ''तुम अपनी कीमत नहीं जानते।'' स्वादहीन ''नमक'' का कोई महत्व नहीं होता; न ही छिपी हुई रोशनी का। जैसे नमक अपना स्वाद खो सकता था, वैसे ही प्रकाश भी अन्धेरे को छितराने की अपनी शज़्ति खो सकता है। यह कैसे हो सकता है? दीया छिपाया जा सकता है। दुख की बात है कि बहुत से लोग, जो यीशु के पीछे चलने का दावा करते थे, अपना प्रकाश अज्ञानता के ''पैमाने'' के नीचे, दुनियादारी के ''पैमाने'' या उत्साह के अभाव के ''पैमाने'' के नीचे रखते हैं।[9] इस अन्तिम वर्ग के विषय में, परमेश्वर ने कहा है, ''मैं दुचिज़ों से तो बैर रखता हूं'' (भजन संहिता 119:113क) अर्थात जिनकी निष्ठा बंटी हुई है। मौफेट ने इस आयत का अनुवाद इस प्रकार किया है, ''मैं उनसे जो आधे-आधे हैं, घृणा करता हूं।''

यीशु के समय में, लोग दीये को बर्तनों के नीचे नहीं बल्कि दीवट पर रखते थे (आयत 15ख)। ये दीवटें दीवारों में ऊंचाई पर बनाई जाती थीं। कई बार यह दीवट दीवार

में बनी जगह होती थी; अज़्सर यह लकड़ी या धातु की छोटी दराज होती थी। ऐसे स्टैण्ड पर रखने से, ''उस घर के सब लोगों को'' दीये का प्रकाश पहुंच सकता था (आयत 15ग)। यीशु ने कहा कि ''*तुज़्हारा* उजियाला मनुष्यों के सामने चमके'' (आयत 16क)।

हम यह उजियाला कैसे पहुंचाते हैं? यीशु ने कहा, ''तुज़्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके *कि वे तुज़्हारे सब भले कामों को देख*'' सकें (आयत 16क, ख)। ''भले काम'' हम उस प्रकार जीवन बिताकर, जैसे हमें बिताना चाहिए और दूसरों की सहायता करके करते हैं, और इस तरह अपना प्रकाश चमकने देते हैं।[10]

मैं पहाड़ी उपदेश से परिचित लोगों के विरोध की कल्पना करता हूं कि अगले अध्याय में यीशु ने ''लोगों को दिखाने के लिए'' प्रार्थना करने तथा उपवास रखने के विरुद्ध चेतावनी दी (मज़ी 6:5; देखें 6:16)। दिखावे *के लिए* और *दिखाई* देने वाले काम में ज़्या अन्तर है? उज़र है ''व्यवहार तथा उद्देश्य का।'' लोगों को दिखाने के लिए भले काम करना जिससे वे *हमारी* प्रशंसा करें, और हमारे भले कामों को देखकर लोगों द्वारा *परमेश्वर* की महिमा करने में बहुत अन्तर है।

यदि हमारा प्रकाश भलाई करने के लिए है, तो लोगों को इसे *देखने* देना चाहिए। किसी ने कहा है कि अन्ततः गुप्त चेले होने वाली कोई ऐसी बात नहीं है, ज़्योंकि या तो गुप्तता चेले का नाश कर देगी या चेला होना गुप्तता का नाश कर देगा।

हमें अपना प्रकाश ज़्यों चमकाना चाहिए? हम अपनी प्रशंसा की नहीं बल्कि परमेश्वर को महिमा देने की इच्छा करें। प्रकाश का उद्देश्य अपनी ओर ध्यान खींचना नहीं, बल्कि वह प्रकाश बिखेरना है, जो इसकी किरणों में है। भज़्तिपूर्ण मसीही जीवन में अगुआई देने का हमारा उद्देश्य अपनी ओर ध्यान खींचने की ओर नहीं, बल्कि (जैसे यीशु ने कहा) ''पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई'' करना है (आयत 16ग)।

सारांश

नमक और ज्योति आवश्यक हैं। हमें लगता है कि हमें बहुत सी चीज़ों की आवश्यकता है, परन्तु अनिवार्य उनमें से केवल कुछ ही हैं। उन अनिवार्य चीज़ों में नमक और ज्योति हैं, ज़्योंकि हम उनके बिना नहीं रह सकते। यीशु ने कहा, ''तुम पृथ्वी के नमक हो''; ''तुम जगत की ज्योति हो।'' आशा है कि इन वाज़्यों में पाई जाने वाली प्रशंसा के महत्व को आप समझेंगे। मेरी प्रार्थना है कि हम इन शज़्दों की चुनौती को स्वीकार करें।

कलीसिया को लोग कैसे जानते हैं? लोग जब उस मण्डली की, जहां आप सेवा तथा आराधना करते हैं, बात करते हैं, तो ज़्या कहते हैं? ज़्या उनकी बातों से यह पता चलता है कि आपकी मण्डली किसी बात *के लिए स्थिर* (अर्थात ''नमक'' है) और यह कि यह प्रभु के लिए कुछ *कर रही* है (अर्थात ''ज्योति'' है)? आपके बारे में वे ज़्या कहते हैं? लोग आपको किस प्रकार जानते हैं? ज़्या आप नमक हैं? ज़्या आप ज्योति हैं?

अज़्सर हम अपने आस-पास के पापी संसार पर चिल्लाते और दुखी होते हैं। हम कहते हैं, ''*ज़्यों?* लोग इतने बुरे ज़्यों हो रहे हैं?'' शायद हमें पूछना चाहिए, ''*कहां है?*

नमक और प्रकाश कहां हैं?'' परमेश्वर हम में से हर एक की ''पृथ्वी के नमक'' और ''जगत की ज्योति'' बनने में सहायता करे।[11]

टिप्पणियां

[1]मूल भाषा में ''तुम'' शब्द पर ज़ोर दिया गया है। ''तुम अपना मूल्य नहीं जानते'' पाठ में टिप्पणी 14 देखें। बहुत सी आयतों में सिखाया जाता है कि मसीही बनना अन्धकार में से प्रकाश में आने की तरह है (देखें यूहन्ना 8:12; प्रेरितों 26:18; इफिसियों 5:8; फिलिप्पियों 2:15, 16; 1 पतरस 2:9)। [2]इस कथन का उद्देश्य शिक्षा के महत्व को कम करना नहीं है। मेरा मानना है कि हर व्यक्ति को जितना वह पढ़ सके, पढ़ना चाहिए। इस कथन का उद्देश्य यह ज़ोर देना है कि बाइबल का ज्ञान हर सैकुलर शिक्षा से अधिक महत्वपूर्ण है। [3]आप अपने सुनने वालों के लिए निजी प्रासंगिकता बनाकर प्रवचन के इस भाग को विस्तार देना चाह सकते हैं। अपने समाज में ''तुम्हारा उजियाला चमके'' पर उन विशेष ढंगों पर ध्यान दें। [4]मैं स्वर्ग में जाने की राह देख रहा हूं, जहां परमेश्वर का प्रकाश अन्धकार को छितरा देगा (प्रकाशितवाक्य 21:25; 22:5)। इसके साथ ही, मैं अन्धकार भरे जगत में हूं, जहां परमेश्वर चाहता है कि मैं रहूं। [5]यह समझाने के लिए कि अन्धकार में छोटे से छोटे प्रकाश का महत्व होता है, आप अपने उदाहरण ले सकते हैं। मैं बड़े-बड़े स्टेडियमों में गया हूं, जहां हर कोई मोमबत्ती या छोटी टॉर्च जला देता है। इसका परिणाम ज़बर्दस्त रहता है। [6]''पहाड़ पर बसे'' नगर आम तौर पर अधिक सुरक्षित होते थे। [7]पैमाना आठ सेर जितना या 8.81 लीटर का होता है। [8]दीये को पैमाने के नीचे रखने का अर्थ अन्ततः ऑक्सीजन खत्म होने पर दीया *बुझ* जाएगा, परन्तु यीशु के कहने का ज़ोर प्रकाश को *छिपाने* पर था। [9]''पैमानों'' की सूची बढ़ाई जा सकती है, इस सूची को अपने इलाके की आवश्यकता के अनुसार इस्तेमाल करें। [10]इसे, भी अपने सुनने वालों को ''तुम्हारा उजियाला चमके'' के उनके इलाके के हिसाब से विशेष ढंग बताने के लिए विस्तार दिया जाना चाहिए।

[11]इस प्रवचन का इस्तेमाल करते हुए आप अपने सुनने वालों को सही प्रभाव डालने के लिए जो भी आवश्यक हो, करने के लिए प्रोत्साहित करें। कुछ लोग ऐसे होंगे, जिन्हें विश्वास और बपतिस्मे के द्वारा मसीही बनने की आवश्यकता है (मरकुस 16:16)। अविश्वासी मसीहियों को मन फिराने, अंगीकार करने तथा प्रार्थना के द्वारा वापस आने की आवश्यकता है (प्रेरितों 8:22; याकूब 5:16)।